बेंजामिन फ्रैंकलिन
एक जीवन चरित्र
योना ज़ेल्डिस मकडॉनो चित्र: मल्का ज़ेल्डिस
बेंजामिन फ्रैंकलिन
एक जीवन चरित्र
बेंजामिन फ्रैंकलिन
एक जीवन चरित्र
दो व्यक्ति तेज़ी से सड़क पर चले जा रहे थे। उनकी आँखें आसमान में
घुमरते तूफान और उसके बादलों पर टिकी हुई थीं। एक के हाथ में कुछ
अजीब तरह की पतंग थी, जिसके ऊपरी सिरे पर धातु का एक तार
निकला हुआ था, और पतंग की दोर में एक चाभी लटकी हुई थी। वे
दोनों एक मैदान में पहुंचे, और तभी बारिश शुरू हो गई, और जोर से
बिजली कड़कने लगी। उनमें से छोटा व्यक्ति पतंग को लेकर मैदान के
दूसरे छोर की ओर दौड़ा, और पतंग आसमान से बांध करने लगी। बड़े ने
पतंग की दोर पकड़ी हुई थी। पानी से तर-तर, दोनों एक छप्पर की
tरफ बढ़े, और उसके नीचे इंतजार करने लगे। थोड़ी देर तक कुछ नहीं
हुआ। दोनों निराश से एक दूसरे की ओर देखने लगे। तभी पतंग की दोर
पकड़े व्यक्ति ने देखा की दोर से निकले कुछ रेशे तन कर खड़े हो गए थे,
मानो उनमें जान आ गई हो। वह अपनी उंगली को चाभी के पास ले
गया, और उसे एक झटका सा महसूस हुआ, बिजली का झटका। जैसी
कि उसे उम्मीद थी, बिजली की एक चिंगारी की दोर के सहारे बादलों
से धातु की चाभी तक आ पहुंची थी, जिससे चाभी विद्रोही हो गई
थी। बिजली का जो हल्का झटका उसने महसूस किया था, वह इस बात
का प्रमाण था। उस आदमी का नाम था बेंजामिन फ्रैंकलिन, और उसने
अपने बेटे विलियम की मदद से यह साबित कर दिया था कि बादलों के
बीच चमकने वाली रोशनी वास्तव में बिजली यानि विद्रुप ही थी।
सन १७०६ के एक ठण्डे दिन बेजामिन फ्रैंकलिन का जन्म हुआ था। उसके पिता जौससम बॉस्टन शहर में साबुन और मोमबत्तियां बनाने करते थे, और मां अबिआह अपने बच्चों की देखभाल करती थीं, जो कि दो-चार नहीं, पूरे तेरह थे। वे सभी चार कमरों के एक छोटे से घर में रहते थे। बेजामिन (बेन) ने बहुत छोटी उम्र में ही पढ़ाना सीख लिया था, और अक्सर जाड़ों की दोपहरी में कोई किताब थामे अपने बिस्तरों में दुकान रहता था। उसके माता-पिता ज्यादा पैसे वाले थे नहीं, इसलिए उनके पास बड़ी ही किताबें थीं। लेकिन बेन को इससे कोई शिकायत नहीं थी। वह उन्हीं किताबों को बार-बार पढ़ता रहता था, हालांकि वे अक्सर मुश्किल शब्दों से भरी होती, और उनमें तस्वीरें भी गिनी चुनी ही होतीं।

जब बेन सात बरस का था, उसने एक कविता लिखी। यह इतनी अप्रत्याशित घटना थी, कि उसके माता-पिता ने उसे स्कूल भेजने का निश्चय किया। उन दिनों बहुत कम बच्चे स्कूल जाते थे, इसलिए माता पिता दूररात स्कूल भेजा जाना किसी भी बच्चे के लिए बड़े गौरव की बात थी। बेन पढ़ने और सीखने में बहुत होशियार था, लेकिन गणित में बहुत कमजोर और उसे समझ नहीं आता था कि उसे लैटिन जैसी प्राचीन भाषा किया पढ़ाई जा रही है, जिसे अब कोई बोलता तक नहीं था। जैसे उसकी उम बढ़ी, वह घुमघूमते बालों और चमकदार आँखों वाला हुफु पुंड़ जुंदुर निश्चित बन गया।

उसे तैरकी और पतंग उड़ाना बहुत पसंद था। उसकी पहली ईजाद यह थी कि वह तैरते समय अपने हाथों और पैरों में लकड़ी के फड़े बांध लेता था, जिससे कि वह और तेजी से तैर सके!
दो साल बाद बेन को स्कूल छोड़ना पड़ा, क्योंकि उसके माता पिता को अपनी दुकान चलाने में उसकी मदद की जरूरत थी। बेन को गणित से भी ज्यादा बुरी लगती थी भेड़ और गायों की उस चर्ची की दुर्गन्ध जिसका इस्तेमाल मोमबत्ती बनाने में होता था। इसलिए उसके पिता ने उसके लिए कोई और काम खोजना शुरू किया। बढ़ी का काम, ईंटें चिनने का काम, या पीठ का सामान बनाना, कुछ भी उसे अच्छा नहीं लगा।

आखिर एक दिन जोसियह को एक बहुत अच्छा विचार आया। उसने सोचा, क्योंकि बेन को किताबें इतनी पसंद है, उसे किताबें बनाने का काम ही क्यों न सिखाया जाये?

बेन के बड़े भाई जेम्स की बॉस्टन में किताबें छापने की दुकान थी। बेन को उसी के पास प्रशिक्षण के लिए भेज दिया गया। वैसे बेन अपने भाई के लिए काम करना तो नहीं चाहता था, लेकिन कम-से-कम यह ईंटें चिनने के काम से तो अच्छा था। इस प्रकार १७१८ में बारह साल की उम्र में छपाई का काम सीखने के साथ बेन के व्यावसायिक जीवन की शुरुआत हुई।
जेम्स की दुकान में बैठे छोटे छोटे अक्षरों को विशेष प्रकार के फ्रेम में लगा कर छपाई का सौंच बनाना सीखा, जिससे कि वे शब्द कागज पर छापे जा सकें। जल्दी ही वह कहानियों और गानों की छोटी छोटी किताबें छपाने लगा। इसी बीच बेन ने लेखन पर भी अपना हाथ आझामा। उसने कई प्रिस्टल घटनाओं पर कविताएं लिखी। इनमें से एक में किसी व्यक्ति के नदी में झुकने का विवरण था, और एक में काजी दादी वाले एक समुद्री डाकू। जेम्स को बेन की कविताएं अच्छी लगी और इसलिए उसने उन्हें प्रकाशित भी किया। जल्दी ही बॉर्टन भर में कविता लिखने वाले इस वालक की चर्चा होने लगी। सन 1721 में जेम्स ने एक अखबार, ज्यू. इंग्लैंड कुर्ट, का प्रकाशन शुरू किया। बेन इसकी प्रतियां छापना और उन्हें ग्राहकों तक पहुँचाता। उसे यह काम तो अच्छा लगता था, लेकिन जेम्स उसे पसंद नहीं था, क्योंकि वह उसके साथ कड़ाई से पेश आता था।

बेन बॉर्टन के जन-जीवन के बारे में हंसी-मजाक भरे लेख लिखने लगा। फिर वह एक काल्पनिक विधवा स्त्री के नाम से लेख लिखने लगा। इन लेखों पर वह "साइलेंस डूगुड" (Silence Dogood) नाम से हस्ताक्षर करता, और रात में अपनी ही दुकान के दरवाजे के नीचे से उन्हें खिसका देता। जेम्स को लगता कि बास्टर में इस नाम की कोई गलतियाँ हैं, जो यह लेख छपाना वाहती है, और वह इन लेखों को प्रकाशित कर देता। हर कोई जानना चाहता था कि यह साइलेंस डूगुड आखिर कौन है। जब बेन ने यह जान चाहता क्योंकि वह खुद ही इस रचनाओं का लेखक है, तो गर्व से अच्छी तरह और प्रसन्न हुए। लेकिन जेम्स को यह बात बिलकुल अच्छी लगी नहीं, और वह बेन पर कोट्दी गला हुआ। कुछ समय बाद जेम्स कुछ और ही मुश्किलों में फंस गया। उसने शासन चलाने वाले अंग्रेज अफसरों के खिलाफ कई लेख छापे। इस कारण उसे उन्होंने जेल जाने पड़ा, और फिर उसका जीवन भी बंद हो गया। उसके अखबार छपाने पर पाबंदी लगा दी गयी। जेम्स ने सोचा कि वह अपनी जगह बेन को अखबार का प्रकाशक बना दे, और इस प्रकार अजज्ञात रूप से अखबार छपना चाहता रखे। लेकिन बेन इसके लिए राजी नहीं था। दोनों भाईयों में इस बात को लेकर इतना झगड़ा हुआ, कि बेन पर छोड़ कर भाग गया।
बाग कर बेन जब फिलिडेल्फिया पहुँचा तो वह फटे-हाल और भ्रूका-प्यासा था।
उसने एक बेकरी से एक पेनी देकर तीन बन खरीदे। क्योंकि उसकी जेब में भरी हुई थी, उसने दो बन अपनी बगलों में दबाये, और तीसरे को खाने लगा। भूख के मारे जब वह बन को जल्दी जल्दी मुँह में फुंस रहा था, तो वहीं गलियारे में खड़ी एक लड़की उसे देख कर जोर-जोर से हंसने लगी। उस लड़की का नाम था डेबोरा रिड। बेन का उससे परिचय हो गया, और बेन ने उसी के घर में एक कमरा खिलाये पर लिया।
उसे एक छापेखाने में नौकरी मिल गयी, और जल्दी ही मालिक ने काम-काज की सारी जिम्मेदारी उसे ही सौंप दी। फिलिडेल्फिया के गवर्नर भी बेन के काम से बहुत प्रभावित हुए, और उसे अपना खुद का कारोबार शुरू करने के लिए मदद की पेशकश की। उन्होंने सुझाया कि बेन इंग्लैंड जाकर छापेखाने की मशीन व अन्य जरूरी चीजें खरीद लाये, जिसका सारा खर्च वह देंगे।
अठारह साल का बेन समुद्री यात्रा के विचार के बजर उत्साहित हुआ, और १७२५ में लंदन को चल पड़ा। लेकिन गवर्नर ने उससे छूठ बोला था। बेन को वह पैसा और परिचय पत्र मिले ही नहीं। घर से तीन हज़ार मील दूर पहुँचे बेन के पास खाने तक को पैसे नहीं थे। किसी तरह उसने लंदन के एक छापेखाने में नौकरी पाई, और घर लौटने के लिए बैंक पैसा जमा होने तक वहीं रहा।
वापस लौटने पर बेन को छापेखाने की अपनी पुरानी नौकरी वापस मिल गई।
लेकिन जल्दी ही बेन अपना खुद का व्यापार शुरू करने में कामयाब हो गया। सन १७२९ तक वह ‘पेनसिलवेनिया गजर’ नाम के अखबार का प्रकाशक बन गया था।
प्रकाशक होने के अलावा वह खुद ही अखबार के संपादक और संवाददाता का काम भी करता था। अखबार में गूंठकर, पहेलियों, और संपादक के नाम पत्र भी छपते थे। जब पत्र कम आते थे, तो बेन मनगढ़त नामों से कुछ पत्र खुद ही लिख कर छाप देता था। उसका अखबार शायद कार्टून छापने वाला अमेरिका का सबसे पहला अखबार था, और यह कार्टून भी बेन खुद ही बनाता था।

बेन ने उसी लड़की, डेबोराह रीड, से शादी कर ली, जो उसे बगलो में बन दबाये देख कर खूब हंसी थी। और अब बेन एक बेटे का पिता भी बन चुका था। डेबोराह, जिसे बेन डबी कह कर बुलाता था, छापेखाना और दुकान चलाने में बेन की मदद करती थी। उसकी दुकान में, जो उसने छापेखाने के करीब ही खोल ली थी, कलम, दावत, किताबें, मौमाजताएं, और लिखने-पढ़ने की अन्य बहुत सी चीजें मिलती थीं। बेन और डबी के अब दो बच्चे थे, फ्रेंक और सैली। फ्रेंक जब घर साल का था तो उसे चेहरे की बीमारी हो गई, और वह चल बसा। इस बात का दु:ख बेन को लम्बे समय तक सताता रहा।
डेबी की सहायता से बेन को अपने व्यापार में बहुत सफलता प्राप्त हुई। सन 1732 में बेन ने "पुअर रिचर्ड्स अल्मनाक" का प्रकाशन शुरू किया। इस पुस्तक में छुट्टी माय की तारीखें, मौसम की भविष्यवाणी, उल्लभ व मैत्रीं की जानकारी, न्यायालय चुनने की तारीखें, ज्ञात-भाट का समय, सूर्य-चंद्र ग्रहण व पूर्णिमा-अमावस्या की तिथियाँ, और ऐसी ही बहुत सी आम जनता के काम की जानकारियाँ शामिल थीं। बेन ने इसे रिचर्ड सॉडर्स उपनाम से लिखा, और इसमें अपने जीवन की कई छोटी छोटी बातें, हंसी-मजाक में दी गई सलाहें, और कई सुझ-सुझ से भरी उक्तियाँ भी डालीं, जैसे कि "अपना बकाया चुका दो, तो जान जाओगे कि तुम्हारी कीमत क्या है", "जल्दी का काम शैतान का", और "एक पैसा बचाना यानि एक पैसा कमाना" इत्यादि। उसका यह प्रकाशन अप्रत्याशित रूप से लोकप्रिय हो गया, और बेन के उपर जैसे पैसे की बारिश होने लगी। वह बहुत धनी बन गया। अब उसे छापाखाना चलाने की जरूरत नहीं थी, इसलिए उसने यह काम अपने एक सहयोगी को सौंप दिया। बेन केवल 42 वर्ष का था, और उसका मन-मस्तिष्क ऊर्जा से उफन रहा था।
चार साल बाद बेन ने नौजवानों के लिए एक प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना करवाई, जो आगे चल कर पेनसिलवेनिया विश्वविद्यालय में परिणत हो गया। इसी प्रशिक्षण केंद्र के एक हिस्से में निर्धारण बच्चों के लिए एक निःशुल्क विद्यालय भी बनाया गया था। पहले ही १७३७ में बेन को पोस्टमोस्टर्स बना दिया गया था, और १७३३ में अंग्रेज़ अफसर ने उसे अमेरिका का सहायक पोस्टमोस्टर्स जनरल नियुक्त कर दिया। इसके बाद बेन ने और अधिक डाकियों की भर्ती की, और डाक सेवा में बहुत से सुधार किये। उसके अपने शहर में ही नहीं, देश के अन्य बहुत से भागों में भी बेन के प्रयत्नों से लोगों के जीवन में बहु-आयामी परिवर्तन आये।

बहुत समय से बेन चाहता था कि वह फिलेडेल्फिया के जन-जीवन में कुछ सुधार लाये। अपने पुस्तक प्रेम से प्रेरित होकर उसने १७३१ में देश के सबसे पहले जन-पुस्तकालय की शुरुआत की, जहाँ से कोई भी आम आदमी पुस्तकें उधार ले सकता था। १७३६ में सबसे पहले अग्नि-शमन विभाग की स्थापना भी उसने ही की, जिसमें ३० स्वयं-सेवी नौजवान काम करते थे। उसने शहर के प्रशासन को प्रेरित किया कि वे शहर की डरके पक्की बनाएं, उन पर राशनी की व्यवस्था करें, और उनकी सफाई का भी इंतजाम करें। १७३१ में उसने फिलेडेल्फिया में ही देश के पहले जन-चिकित्सालय की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
शुरू से ही बेन को विज्ञान से विशेष लगाव रहा था। जब १७५२ में उसने विलियम के साथ आकाशीय बिजली के बारे में अपनी चौंकाने वाली खोज की तो यह खबर तेजी से चारों ओर फैली। बेन की इस खोज के साथ उसने कई बहुत उत्साहित था। लेकिन बेन के मन में सवाल था: "ऐसे दार्शनिक ज्ञान का क्या लाभ जिसका जीवन में कोई उपयोग न था।" वह आकाश से गिरने वाली बिजली के खतरे को कम करना चाहता था, और इसके लिए उसके मन में एक विचार भी था। इमारतों के शिखर पर एक धातु का मोटा सरिया लगाया गया, जिससे एक मोटा विद्युतचालक तार भवन की दीवार के सहारे धरती तक आता था। जब आकाश से बिजली भवन पर गिरती, तो उस वाद नुकसान किये बिजली उस तार से होकर धरती में प्रवेश कर जाती थी। इस प्रकार वह इमारत और उसमें रहने वाले लोग पूरी तरह सुरक्षित रहते।

पहले बेन ने ऐसा तड़ितचालक अपने घर पर लगाया। जल्दी ही अन्य बहुत सी इमारतों में भी ऐसे तड़ितचालकों का प्रयोग होने लगा। इनमें शामिल था मेरीलैंड राज्य के एनापोलिस शहर में स्थित राजकीय विधान भवन। बेन ने अपने इस अविष्कार को पेटेंट कराने या उससे मुनाफा कमाने से इनकार कर दिया। अपितु उसने तड़ितचालक बनाने सम्बन्धी सारी जानकारी प्रकाशित कर दी, जिससे कि कोई भी त्यक्ति उसे अपने घर में लगा सके।
फेन ने बेवकूफी से अपनी रुचि का सदुऩमोग फहुत से व्मावहारयक औय जनोऩमोगी कामों के लिए किया। उसने "फ्रें क्करन स्िोव" का भी अन्वेषण किया, जिसका काम था आतिशदान में जल रही आग की गर्मी को पहारे के ही अंदर सीमित रखना, बजाय इसके कि वह चिमनी के रास्ते बेकार ही बाहर चली जाय। उसने शहर की सडकों पर रोशनी करने के लिए एक नए प्रकार के तैप का भी अविचक्क निर्माण किया, जो पहले से ज्यादा देर तक रोशनी करता था और ईंधन की खपत को भी कम करता था। जैसे बेन की उम्र बढ़ी, उसे दो-दो चश्मों की ज़रूरत पड़ने लगी, एक पढ़ने के लिए और दूसरा दूर देखने के लिए। वह उसने दोनों चश्मों के लेस को आपस में जोड़ कर एक ही फ्रेम में जड़ लिया, और इस प्रकार बाइफोकल चश्मे का ईजाज किया। जैसे लाखों लोग ऐसे चश्मे पहनते हैं। यह वायुमिक, हार्प औय गिटार जैसे वाद्य तो बजाता ही था, उसने एक नए वाद्य "ग्लास आर्मोनिका" की ईजाज की, जो कि अलग-अलग नाप के कंच के प्लास्टिक से बनाया गया था।

बेन को राजनीति में भी रुचि थी। १७३६ में उसे पेन्सिलवेनिया विधान सभा के लेखाकार पद पर नियुक्त किया गया। पंद्रह वर्ष तक उसने विधान सभा में होने वाली सभी कार्यवाहियों का लेख जोखा रखा। विधान सभा में होने वाली तक्रीरों को सुनने सुनने वह थक जाता था, लेकिन क्कर होने के नाते उनमें कोई भाग नहीं ले सकता था। इसलिए १७५१ में उसने विधान सभा की सदस्यता के लिए भुनाव लड़ा, और जीता भी।
तीन साल बाद १७५४ में फ्रेंच और ब्रिटिश लोगों के बीच युद्ध छिड़ गया। यह युद्ध उत्तरी अमेरिका पर अपना प्रभुमुख स्थापित करने के लिए था। रेड इंडियन लोग फ्रांस की मदद कर रहे थे, और दूसरी ओर था ब्रिटेन, अमेरिका के अपने १३ औपनिवेशिक राज्यों के साथ। बेन ने इस युद्ध में एक ब्रिटिश कर्नल की भूमिका निभाई। विलियम ने भी उसकी मदद की। उन्होंने सैनिकों का तैयार किया, किले बनाये, और सेना का संगठन किया। लेकिन युद्ध लड़ने के लिए उनके पास धन की कमी थी, अतः बेन और विलियम १७५७ में पैसे का इंतजाम करने इंग्लैंड गए।

उनकी यात्रा काफी मुश्किल रही। वे बड़ी कठिनाई से फ्रेंच समुद्री लुटेरों के चंगुल से बच पाए। रास्ते में कई तूफान भी आये, और वह किस्मतवाले थे कि उनका जहाज ध्वस्त होने से बच गया।

अंततः वे लंदन पहुंचे, जहाँ बेन ने पांच साल गुज़रे और युद्ध के लिए पैसे का प्रबंध किया। इस दौरान विलियम को नई की पढ़ाई करता रहा। अमेरिका के सर्वप्रथम वैज्ञानिक और आविष्कारक होने के नाते बेन को वहाँ काफी मान-सम्मान प्राप्त हुआ। विलियम ने इस वक्त तूफान तटावर नू-जर्सी राज्य के गवर्नर के पद पर नियुक्त कर दिया गया, और उसका विवाह भी हो गया। १७६२ में बेन फिलडेल्फिया वापस आ गए, और कुछ समय बाद इंग्लैंड और उसकी पत्नी भी अमेरिका आ गए।
लेकिन वहां नई मुस्किलें जन्म आई थीं। पेन नामक ब्रिटिश परिवार, जिसने पुनर्विधि-विद्युत राज्य की स्थापना की थी, अब भी वहां राज करता था। वे शासक चाहते थे कि वे सीधे इंग्लैंड के राजा के अंतर्गत उसके नाम से यह शासन चलाए। इसे लागू करने के लिए 1764 में बेन को फिर इंग्लैंड भेजा गया। उसे वहां पहुंचे कुछ ही समय हुआ था कि एक और गंभीर समस्या आ खड़ी हुई। इंग्लैंड ने फ्रेंच और रेड-इंडियन लोगों के खिलाफ जंग तो जीत ली थी, लेकिन अब वह रुझे के बीड़ा तले दबा हुआ था।

इसलिए पैसा उपायों के लिए 1765 में इंग्लैंड ने स्टाम्प एक्ट का नाम से एक नया कानून पारित किया। इस कानून के अंतर्गत अमेरिकन लोगों पर अखबार व कागज की बनी अन्य वस्तुओं पर नया टैक्स लगाया गया।

बेन इस टैक्स के खिलाफ था, पर बहुत अधिक नहीं। उसे पता नहीं था कि अमेरिका में लोग इस टैक्स से बहुत नाराज थे, और इसका घोर विरोध कर रहे थे। उन लोगों को लगा कि बेन ने उनके साथ विशालधार बनाया है, और उन्होंने फिलिडेल्फिया में बेन के घर को जला डालने की धमकी दी।

जब बेन को इस बात का पता चला तो वह तुरंत समझ गया कि अमेरिकन जनता कितने गुस्से में थी। उसने स्टाम्प एक्ट के खिलाफ अपनी आवाज उठाई, अखबारों का पत्र लिखा, इस बारे में भाषण दिए, और कानून बनाने वालों से इस पर बहस की।

आखिरकार, मुख्यतः बेन के प्रयासों के कारण, यह कानून रद्द कर दिया गया। लेकिन बदले में ब्रिटिश सरकार ने चाय व अन्य कई वस्तुओं पर टैक्स लगाया। बेन ने हमेशा अमेरिका में रहने के बावजूद ब्रिटेन को अपना ही देश माना था। लेकिन अब उसका नज़रिया बदलने लगा था। इंग्लैंड के लोग अमेरिकी उपनिवेशों के निवासियों के प्रति समानता का भाव नहीं रखते थे। वे उन पर टैक्स लगाने के परन्तु उन्हें भला देने का अधिकार नहीं देते थे।
दिसम्बर १७७४ में विलियम ने अपने पिता के पत्र लिख कर सूचित किया कि
डेबोरा फ्रैंकलिन का देहांत हो गया है। उस समय डेबोरा की उम्र ६४ वर्ष की
थी। मार्च १७७५ में बेन घर को वापस चल पड़ा। उसका मन बहुत दुखी और
निराश था। उसकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी, और इंग्लैंड आने के अपने
उद्देश्य में वह विफल रहा था। १९ अप्रैल को बेन के वापस अमेरिका पहुंचने से
पहले ही इंग्लैंड और उसके अमेरिकी उपनिवेशों के बीच युद्ध छिड़ गया।

बेन ५ मई १७७५ को फिलेडेल्फिया पहुंचा और अगले ही दिन उसने
कान्टिनेंटल कांग्रेस में कार्यभार संभाल लिया।

यह कांग्रेस अमेरिकी नेताओं का एक समूह था जिसका मुख्य उद्देश्य इंग्लैंड से हो
रहे युद्ध को जीतना था। बेन की उम्र ६९ वर्ष की हो चुकी थी लेकिन फिर भी वह रोज
बाहर घंटे काम करता था। पोस्टमास्टर के नाते उसकी जिम्मेदारी थी कि डाक
जल्दी से जल्दी अपने गंतव्य तक पहुंचे। उसने कानाडा को, जिस पर इंग्लैंड का
राज्य था, अमेरिका का साथ देने के लिए प्रेरित करने का प्रयत्न किया। लेकिन
बेन को इस काम में सफलता नहीं मिली, और इस लम्बी और मुश्किल यात्रा में वह
मरते-मरते बचा। किसी तरह वह फिलेडेल्फिया वापस पहुंचा, जहाँ कांग्रेस में यह
बहस छिड़ी हुई थी कि क्या अब अमेरिका को इंग्लैंड से अपनी आजादी की घोषणा
कर देनी चाहिए।
कुछ लोगों का मत था कि टेक्स के मुद्दों का समाधान हो जाये तो अमेरिका पर इंग्लैंड शासन जारी रहने में कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन दूसरा मत यह था कि अब अमेरिका के स्वतंत्र राष्ट्र बनने का समय आ गया था। यदि स्वतंत्रता का निर्णय लिया गया तो अमेरिका को यह बताना होगा की वह इंग्लैंड से अलग क्यों होना चाहता है। जून 1776 में कांग्रेस ने एक पांच सदस्यीय कमेटी को यह जिम्मेदारी दी कि वह अमेरिका का आज़ादीनामा (Declaration of Independence) लिख कर तैयार करे। बैजामिन फ्रैंकलिन भी इस कमेटी के सदस्य थे। कांग्रेस ने इस मसले पर 2 जुलाई 1776 को मतदान कराया।

बेन एक बहुत प्रभावशाली वक्ता थे। मतदान हुआ, और स्वतंत्रता के निर्णय की जीत हुई। दो दिन बाद कांग्रेस ने आज़ादीनामे पर अपने मुहर लगा दी, और तब से ४ जुलाई को अमेरिका के स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है।
हालाँकि बेन बहुत खुश थे, लेकिन उन्हें इस बात का दु:ख था कि विलियम ने इस पूरे प्रकरण में इंग्लैंड का साथ दिया था। विलियम को समझाने की उनकी सारी कोशिशें बेकार गईं। तब विलियम को जेल भेज दिया गया। बेन चाहते थे कि कोंग्रेस से कह कर उसे छुड़ा सकते थे। लेकिन अमेरिका इस समय खतरे में था, और वह किसी व्यक्तिगत सहायता की मांग नहीं करना चाहते थे, यहाँ तक कि अपने बेटे के लिए भी नहीं।

युद्ध पूरे जोर पर था। शुरू में ऐसा लग रहा था कि शायद इंग्लैंड विजयी होगा। फिर कोंग्रेस ने बेन से कहा कि वह फ्रांस को अपने पक्ष में लाने का प्रयास करें। बेन अब काफी युद्ध हो चुके थे। उनके लिए फ्रांस की यात्रा आसान न थी। लेकिन फिर भी वह गए। उनके जहाज को शीतकालीन समुद्री तूफानों का सामना करना पड़ा। ब्रिटेन के जासूसों का जाल भी चारों और फैला हुआ था। बेन अपने सन्देश अद्यतन स्थायी से निकलते थे, और उन पर एक गोपनीय नाम से हस्ताक्षर करते थे।

इस बार बेन को सफलता प्राप्त हुई। फ्रांस ने अमेरिका का साथ देना स्वीकार किया, और अंततः १७८३ में अमेरिका युद्ध में विजयी हुआ। अमेरिका और ब्रिटेन के बीच शांति की संधि होने के बाद, बेन पर वापस जाना चाहते थे, लेकिन कोंग्रेस ने उनसे आग्रह किया कि वे फ्रांस में अमेरिका के राजदूत का पदभार संभालें। १७८५ तक वे फ्रांस में ही बने रहे, और फिर अमेरिका लौटे। युद्ध के दौरान ही विलियम को जेल से छोड़ दिया गया था, और वह इंग्लैंड में रहने लगा। अमेरिका आते समय बेन इंग्लैंड में भी रहे थे। विलियम उनसे मिलने गए थे, और उनसे समझौता करना चाहा, परन्तु बेन नहीं माने। ब्रिटेन का पक्ष लेने के विलियम के अपराध को वे क्षमा न कर सके।
फिलेडेल्फिया वापस लौटने पर बेन का भव्य स्वागत हुआ। कुछ समय बाद उन्हें पेन्सिल्वानिया की शीर्ष कार्यकारी सभा का अध्यक्ष चुना गया। इक्वासी वर्ष के उम्र में उन्हें अमेरिका का संविधान तैयार करने में भी अपना योगदान दिया। १७ सितंबर १७८७ के दिन इस संविधान पर हस्ताक्षर किये गए। वही संविधान आज भी उस देश के शासन सम्बन्धी आदशों की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है।

इंग्लैंड से वापस लौटने के बाद से बेन अपनी पुत्री और नाती-पोतों के साथ रह रहे थे। उनका स्वास्थ्य अब ठमने लगा था। जब स्वास्थ्य कारणों से वह बिस्तरे तक सीमित रहते, तो अपने नाती-पोतों की बातें सुन कर अपना दिल बहलाते।
फेन के जीवन के अंतिम कार्यों में से एक था दासप्रथा के उन्मूलन के लिए उनका प्रयत्न। वह दास प्रथा उन्मूलन समिति के अध्यक्ष थे, और इस विषय पर अपने विचार सिखाते रहते थे। उनके अंतिम सार्वजनिक कार्यों में एक था कांग्रेस को दास प्रथा की समाप्ति की पुर्जोर सिफारिश करने वाला एक जापन सौंपना।

१७९० की वर्षत ऋतु के समय फेन गंभीर रूप से बीमार हो गए, और १६ अप्रैल को उनका देहांत हो गया। मृत्यु के समय उनकी आयु ४८ वर्ष की थी। पूरे अमेरिका व अन्य देशों में भी उनके निधन का शोक समायोजन किया गया। उनके अंतिम संस्कार में बीस हजार से भी अधिक लोगों ने भाग लिया। मृत्यु के बाद भी उनका अनेक प्रकार से श्रद्धांजलियाँ दी जाती रहीं। बहुत से कवियों, लेखक और पुस्तकें लिखी गईं, और कई स्थानों पर उनकी प्रतिमाएं लगाई गईं। बहुत से अमेरिकी नगरों के संस्थानों और मार्गों पर उनका नाम अंकित है। सौ डॉलर के नोट पर उनका सीम्य और विद्वान चीलर आज भी मुख्यता है। यद्यपि उनके संसर छोड़े एक लम्बा समय बीत चुका है, एक प्रकाशक, वैज्ञानिक, आविष्कारक, देशभक्त और राजनीतिक के नाते समाज पर उनका अमित प्रभाव आज भी महसूस किया जाता है। जिस महान देश की स्थापना उनके योगदान से हुई, वह लगातार फल-फूल रहा है।
बेंजामिन फ्रैंकलिन के जीवन की समय-रेखा

१७०६: बॉस्टन में मिन्क स्ट्रीट पर जन्म।
१७१८: अपने भाई जेम्स के साथ आठ वर्ष लगभग वेतन-रहित प्रशिक्षण की शुरुआत।
१७२२: साइरेंस डूगुड के साथ आठ वर्ष रहने पर फिलेडेल्फिया पहुँचना, और अपने भावी पत्नी डब्लियों रीड से मुलाकात।
१७२५: पहली बार इंग्लैंड की समुद्री यात्रा।
१७२६: फिलेडेल्फिया की वापसी।
१७२८: फिलेडेल्फिया में छापे खाने की शुरुआत।
१७३०: डब्लियों से विवाह, और पहले पुत्र विलियम का जन्म।
१७३१: अमेरिका की पहली पत्नी पॉलिस इंडियर की शुरुआत।
१७३२: पुत्र रिचर्ड अल्बर्ट का प्रकाशन। दूसरे बेटे फ्रैंकी का जन्म।
१७३६: फिलेडेल्फिया के सर्व प्रथम स्वयंसेवी अभिनवगमन दल का गठन। फ्रैंकी की वेचक से मृत्यु।
१७३७: फिलेडेल्फिया के पोस्टमांडर पद पर नियुक्त।
१७४३: पुत्री, सैलिया, का जन्म।
१७५४: आमेवी का विवाह। फ्रैंकी की वापसी, और कोन्ट्राइन्टल बॉर्डर के लिए नियुक्त।
१७५२: इंग्लैंड की दूसरी समुद्री यात्रा।
१७६२: दो साल फिलेडेल्फिया रहने के बाद फिर इंग्लैंड की यात्रा।
१७६६: स्टाम्प एक्ट की वापसी के लिए संघर्ष।
१७७१: अपनी आत्मकथा के लेखन का प्रारम्भ।
१७७४: पत्नी डब्लियों का निधन, फिलेडेल्फिया की वापसी, और कोन्ट्राइन्टल बॉर्डर में नियुक्त।
१७७६: अमेरिका के लिए जिम्मेदारी। अमेरिका के लिए समर्थन मांगने हेतु क्रांस की यात्रा।
१७७३: अमेरिका और इंग्लैंड के बीच शांति समझौते में योगदान।
१७७५: अमेरिका वापस लौटने पर भत्ता स्वागत।
१७७६: इन्फांसी वर्ष की अवस्था में अमेरिकी संविधान पर हस्ताक्षर करने वाले वृद्धतम व्यक्ति।
१७७९: दासप्रथा उन्मूलन सभा के अध्यक्ष रुप पर नियुक्त।
१७८०: १२ अप्रैल को निधन।
बेंजामिन फ्रैंकलिन के आविष्कार

बाइफोकल चश्मे: जिनका इस्तेमाल पास व दूर दोनों एक ही चश्मे से देखने के लिए होता है।

"बिजी-बॉडी": कई दर्पणों से बनाई गई ऐसी व्यवस्था जिससे घर के ऊपरी तल पर बैठा व्यक्ति भी नीचे जाकर द्वार खोले बिना द्वार पर खड़े व्यक्ति को देख सके।

तीन सूझवार वाली छड़ी: जो कि घंटे और मिनट के अलावा अंक भी दर्शाती है। इससे पहले की घड़ियाँ केवल घंटे और मिनट ही दिखाती थीं।

एक्स्टेंशन आर्म: लम्बी छड़ी से बनाया गया यंत्र जिससे ऊँचाई पर रखा सामान आसानी से उठाया जा सके।

फ्रैंकलिन स्टॉव: गर्म हवा को कमरे में चारों और सामान रूप से फैलता है, और धुंए को चिमनी के रास्ट्र बाहर फेंक देता है।

लाइब्रेरी चेयर: कुसी में नीचे छिपे हए पायदान लगे होते हैं, जिन्हें खुलकर बाहर निकालते जाना सकता है, और उन पर खड़े होकर ऊँचाई पर रखी किताबों तक पहुँचा जा सकता है।

तक्षितालक (लाइटनिंग कंडक्टर): आकाश से गिरने वाली बिजली को अपनी और खींचकर घरती में भेज देता है, और इससे दोनों व उनमें उपस्थित लोगों को सुरक्षित रखता है।

दूरचालित ताला: बिस्तर में बैठे बैठे एक रस्सी को खींचकर घर के दरवाजे में ताला डाला जा सकता है।

"पुसर रिचर्डस अलमानक " में बेन फ्रैंकलिन द्वारा लिखी सूक्ष्टियाँ

मछलियाँ और मेहमान, दोनों में तीन दिन बाद दर्जनथ आने लगती है।

ईश्वर भी उनकी मदद करता है जो अपनी मदद स्वयं करते हैं।

तीन लोग किसी राज को गोपनीय तभी रख सकते हैं जब उनमें से दो की मृत्यु हो जाये।

इंसानों और िरबूजों को परख पाना आसान नहीं।

उधार लेने वाला अपने लिए मुक्तियों ही मोल लेता है।

कुलहाड़ी के छोटे छोटे प्रहारों से बड़े बड़े बरगद भी गिर जाते हैं।

खोया हुआ समय दोबारा वापस नहीं आता।

यदि आप प्रेम चाहते हैं, तो प्रेम करें, और अपने को प्रेम के काबिल बनाये।

रोज़ाना एक सेब हकीम को दूर ही रखता है।

जो कुत्तों के साथ रहेगा, उसके मक्खियां अंत में चढ़गी ही।

जो बोलते ज्यादा हैं, वह ज्यादातर करते बहुत कम हैं।

समय से सोना, और समय से जागना, यही राज है सेहत, दौलत और समझदारी का।

समझदारी के दरवाजे कभी बंद नहीं होते।
बेंजामिन फ्रैंकलिन